TECHE
UDINE

MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. **P_MSS_4335**

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

मंकल्प।प२ ॥६०॥ अर्हंतभगवंतश्रीमन्महावीरदेवतणइ आसनि। अउलमंगलमाला प्रकाशनि
॥ श्रीजिनशासनि। जिहां पर्व श्रीपर्युषणापर्व तणइ समागमनि। श्रीकल्पसिद्धांतवा-
चनाधिकारि। तिहां पहिला अधिकार वाच्य हुइ। पुरिम चरिमाण कप्पो। मंगलं वद्ध-
माणतित्थंमि। इह परिकहिया जिणगणहराइ। थेरावलि चरित्तं॥१॥ प्रथमतीर्थंकर च-
रमतीर्थंकर। तेहनउ आचारविशेष॥ अनइ बावीस तीर्थंकरनउ आचारविशेष प्रति-
पादइ कल्प जाणवा यथा॥ आचेलुक्कुद्देसिय २॥ सिज्जायररायपिंड ४ किइकम्मे
५। वय ६ जिट्ठ ७ पडिक्कमणे ८ मासं ९ पज्जोसवणाकप्पो १०॥ तत्र प्रथम अचेलकल्प। चेलत्र
इइवस्त्र रूढाइं। तेजे हतीरइ नही ते अचेलक कहीयइ। प्रथम चरम तीर्थंकरनइ वार-
इ अचेल धर्म कहीयइ जेह तणी कांई पहिस्या। कांई न पहस्या॥ वोलवइउ नास्ति 1
कंतीव्यारिआंगुल नावउ। मोडा॥ कंतीव्यारिआंगुल ऊचउ॥ तेही अहाई हाथ २

लांबउ॥ कल्पइउ साधुसाध्वीनिहिं हाथ लांबउ॥ एक खवउ उघाडउ। एकखवउ ढांकयुं। ते
पहिस्युं अणपहिस्यउ कहइवाइ॥ तत्र दृष्टांत॥ कोइएक स्त्री वस्त्र जीर्ण देषी साडी कवि-
दनइ वणावा आपी॥ ते कतावलउ वणइ नही॥ तेह प्रतइं कहइ कुंनागी उघाडी हुं। तउ
तें नागी उघाडी नथी॥ पणि जीर्णवस्त्र पहिस्या अणपहिस्या माहि॥ अथवा बीजउ
दृष्टांत॥ कोइएक पुरष स्नान करीया आ तणी पोतीयुं पहिरीनइ बइठउ॥ तिसइ
सबंधी कोइ आवउ। कहइ आवउ भ अमुकउ एक कार्य छइ। ति वारइ कहइ इहिवा-
णां कुंनागउ उघाडउ बइठउ हुं। तउ तेउघाडउ नही॥ पणि तेपोतीयुं पहिस्युं अणप-
हिस्यउं जाणिवुं॥ अचेलकल्प कहवाइ॥ पंचवर्ण प्रमाणोपेत॥ अप्रमाणोपेत॥ जेह बउस
कमतउ लहइ तेह उल्पइ॥ ते तणी बावीस तीर्थंकरनइ वारइ सचेलक अचेलक ज
इ॥ जेह तणी श्रीषभ महावीर तीर्थंकरनइ वारइ। कहुं जउ॥ चरम तीर्थंकर नइ वारइ वकजड 2

माहणीयर
२.

इ जी वक्र जड। बावीसनी र्थंकरनइ वारइ ऋजु प्राज्ञ आवइ॥ बीजउ कल्प उद्देशा
कनउ जाणिवउ॥ प्रथम चरमनी र्थंकरनइ वारइ उद्देशाक हुतां आधाकर्मिकआहा
रादिक कह्या वाइ॥ एकनइ उद्देशी कीधा कल्पइ॥ तउ सरतबइ माहि जेतला साधु बइ॥
तेहनइ न कल्पइ बावीसनी र्थंकरनइ वारइ। जेहनइ उद्देसी कीधा कल्पइ तेन कल्पइ तउ।
बीजा[illegible] आ जउ कल्प सिज्झातर पिंड जाणिवउ॥ सिज्झातर कहतां गृहनउ स्वामी॥
तिणरउ आहार सघली र्थंकरनइ वारइ निषेध जाणिवउ॥ तिणइ गलइ राषमानरउ
निषेध॥ संस्तारक पाटफलगइत्यादिक सिज्झातरदोषन लागइ॥ वलातकालनउ प्रति
क्रमण कीधइ॥ आहारादिक इलागइ॥ चउथउ कल्प राजानउ जाणिवउ॥ जेहनइ मू
र्द्धाभिषेक कीधउ हुइ। सेराजा कहीइ॥ तेहनउ पिंड सेराज्यपिंड॥ ते प्रथम चरमतीर्थंक
रनइ वारइ न कल्पइ॥ बावीसतीर्थंकरनइ वारइ कल्पइ॥ अशनादि चउभक्ष्य वस्त्रपात्र २

उंछनक प्रमुख राज्यपिंड कहीइ॥४॥ पांचमउ कल्प वंदनक जाणिवउ॥ रतक मोटिकुं नेदे॥ एकत्र
स्कस्थान बीजउ वंदनक। सवे तीर्थंकरनइ वारइ संजताए साधु प्रतइ करिवुं॥ छठउ कल्प।
प्रथम चरमतीर्थंकरनइ वारइ॥ पंचयामिक धर्म॥ बीजा तीर्थंकरनइ वारइ चाउर्यामि
क धर्म। ते कांइ परिग्रह छिकुं ते देएक सचित्त एक अचित्त। स्त्रीसहित परिग्रहमाहि लेषव
इ॥ ते सणी चाउर्यामिक धर्म जाणिवउ॥ सातमउ कल्प। प्रथम चरमतीर्थंकरनइ वारइ
वृज्या ज्येष्ठ॥ बावीसतीर्थंकरनइ वारइ वयइं करी ज्येष्ठ॥ प्रथम चरमतीर्थंकरनइ वारइ॥
अतीचार लागइ॥ अथवा न लागइ॥ तउ पिणि उभयकालि प्रतिक्रमण करिवउ॥ बावीस
तीर्थंकरनइ वारइ॥ जिवारइ अतीचार लागइ॥ तिवारइ पडिकमणउ करइ॥ न लागइ॥
तउ वर्षे दिवसइ पिणि न करइ॥ नवमउ कल्प प्रथम चरमनइ ती छिमासकल्प जाणिव
उ॥ बावीसनी र्थंकरनइ वारइ अवस्थित कल्प जाणिवउ॥ निरतीचारपणउं जाणइ तउ प्र
थकोडि लगइ रहइ॥ सातीचारपणउ जाणइ॥ तउ एक दिवस पिणि न रहइ॥ दसमउ कल्प 3

मा०कल्पी०प ।प्रथमचरमतीर्थंकरनइवारइ।।आषाढचउमासाथी।मासनइव[illegible]दिवसगएतिहांनि
श्चइकरीपर्युषणापर्वकरइ।बावीसतीर्थंकरनइवारइमासक[illegible]नोयरिजाणिवा।ए
दसकल्पकाइकह्या।।जीवविशेषसणीकह्या।।प्रथमतीर्थंकरनइवारइऋजुजडजाणि
वा।। तिहांदृष्टांत।। एकइनगरिकेइएकआवाचेआव्या।।महात्माविहरवापहुता।।अ
सूराआव्या।गुरेपूछ्या।शिष्येअसूराकांइआव्या।शिष्यकहइभगवननटूआनाचता
हूता।।तेअम्हेजोया।तिणइअसूराआव्या।।गुरेकहिउ।शिष्योसाधुनइनटूआनाच
ताजोवानही।शिष्येकहउभगवननहीजोवां।बीजइदिवसिवलीअसूराआव्या।।
वलीगुरेपूछ्यउ।।तिवारइकहइभगवनआजनटुईनाचतीहूती।तेअम्हेजोवताहू
ता।।गुरेकहउनटुईजोइवीनही।तउभगवनमिछामिदुक्कड।।पिणिएतलुंनजाणइ।
नटूआनिषेध्यातेह।।तउनटुईनाचतीकिमजोईजइ।।पिणिजेतलीवारकहीयइतेत
तलीवातजाणइ।बीजीवातनजाणइ।।अथवाबीजउदृष्टांत।।कुंकणवणिगनउ।।को ३

कणदेशइकोईएकवणिगहूउ[illegible]टंनादिकनउमोहछांडीवृद्धावस्थाइंदीक्षानउग्रहण
कीधउ।अन्यदाईर्यापथकीपडिकमतांघणीवारकाउसग्गलेईरहिउ।।गुरेपूछिउशिष्य
घणीवारकाउसग्गकाइकीधउ।तिवारइकहइभगवनजीवदया।चींतवतउहूंतउ
गुरेकहिउकेहीजीवदयाचीतवी।तिवारइकहइवालागउ।भगवनमांडतग्रीष्मरितिं
बइतेहूंचींतवतउहूंतउ।।हूंसदाक्षेत्रइपुत्रादिकमेल्हीवहुयरीउमुखकहावतउपु
हूतधान्यादिकहूंनीमाहरापुत्रनिश्चिंतहूंता।।तेजउहिवणाकरइतउसुखीहू
इनहीतरदुखीहुस्यइ।एहवीजीवदयाहीयामाहिचींतवतउहूंतउ।।गुरेकहिउइ
मचींतवानउसाधुनइमार्गनही।तउभगवनमिछामिदुक्कड।।तेहनामनमाहिकूट
लाईकाईनही।।श्रीमहावीरनइशासनइवक्रजडजीवहूइ।।तेहऊपरिदृष्टांत।।यथा
।।कोईएकश्रेष्ठिपुत्रदुर्विनीतजाणी।।पिताइंस्वजनवर्गबइठांशिष्यादीधीजेपु
त्रादिकवृद्धनइऊतरनदीजइ।एहवीशिष्यादीधी।अन्यदायईगृहमाहिपइ 4

सीधारदेई पिता नी शिक्षा ऊपरि बइसी रहिउ ॥ पिता आव्यउ राड्ह कीधउ ॥ पिण वलतउ
राड्ह न द्यइ ॥ पिता नइ आर्त्ति ऊपनी ॥ तात ऊपरि चडी माहि पइठउ ॥ देषइ तउ शिक्षा
ऊपरि बइठउ छइ ॥ कह्यउ तइं वचन कांइ न कर्यउ ॥ वलतउ कहइ ॥ तुम्हे जि मुझन
इ शिक्षा दीधी छइ ॥ जेवडा सामहउ ऊतर न दीजइ ॥ तेह भणी चरम तीर्थंकर नइ वारइ
वक्रजड जीव जाणिवा ॥ बावीस तीर्थंकर नइ वारइ जे जीव ते ऋजु प्राज्ञ ॥ ऋजु कहतां
सरला प्राज्ञ कहतां प्रज्ञावंत ॥ प्रथम तीर्थंकर नइ वारइ दुर्विज्ञो धर्म मार्ग जाणतां
दोहिलउ ॥ चरम तीर्थंकर नइ वारइ पालतां दोहिलउ मार्ग ॥ बावीस तीर्थंकर नइं
जाणतां पिण सोहिलउ ॥ पालतां पिण सोहिलउ ॥ तेह भणी दस कल्प आचार विशेष
जूजूया जाणिवा ॥ मांगलिक नइ अर्थि श्री वर्द्धमान स्वामिनउ ॥ चरित्र कहिस्यइ
॥ इणपरि बावीस तीर्थंकर ना अंतरकाल कहिस्यइ ॥ गणधर नइ स्थविरावली साधु
सामाचारी कहिस्यइ ॥ हिव क्षेत्र ना गुण कहइ छइ ॥ चिक्खल्ल पाण थंडिल वस ४

हीगोरसयजणाउलेह विज्जेउ ॥ उसहठनिचया ॥ दिवईरा पासंडा भिक्खा एस सज्झाय
रत्र ॥१॥ ए तेरह गुण उत्कृष्टा जाणिवा ॥ जघन्य इतउ च्यारि गुण जाणिवा ॥ सुलहा विहार
भूमी ॥१॥ विआरभूमीय २ सुलह सिज्झा उत्र ॥ सुलहा सिक्खा थरियाउ ४ जहन्न यं चा सखि
तं ॥१॥ हिव पर्युषणा पर्वनउ माहात्म्य कहइ छइ ॥ पर्वतां माहि मेरु पर्वत ॥ वृक्ष माहि
कल्पवृक्ष ॥ राजा माहि चक्रवर्त्ति अधिक ॥ मणि माहि चिंतामणि अधिक ॥ स्वापद माहि
जिम सिंह ॥ समुद्र माहि सयंभूरमण समुद्र ॥ शील ना पालनहार माहि जिम सुदर्शन
श्रेष्ठि ॥ स्वामिभक्त माहि जिम हनुमंत ॥ सती माहि सीता ॥ ज्ञान माहे केवलज्ञान अधि
क ॥ सुख माहे मोक्ष ना सुख अधिक ॥ यतः ॥ मंत्राणां परमेष्टिमंत्र महिमा तीर्थेषु शत्रुं
जयो ॥ दाने प्राणिदया गुणेषु विनयो ब्रह्म व्रतेषु व्रतं ॥ संतोषो नियमे तपेषु विशम
स्तत्वेषु सद्दर्शनं ॥ सर्वज्ञोदित धर्मकर्मसु परं स्यात् पार्षिकं पर्व सु ॥१॥ मंत्र मोहन आ
कर्षन ॥ उच्चाटन अनेक छइ ॥ पिणि मंत्र माहि परमेष्टि मंत्र अधिक ॥ तीर्थ माहे श्री शत्रुं
जय अधिक ॥ यतः ॥ जं किंचि नाम तित्थं ॥ सग्गे पायाल माणुसे लोए ॥ तं सव्वमेव दिट्ठं ॥ पुंड 5

मामणीक

रीएवंदिएसंतो॥२॥दानमाहिअनयदानअधिक गुणमाहेविनयगुणअधिक।व्रतमाहे
ब्रह्मव्रतअधिक। तपमाहेजिमउपसम॥दर्शनमाहेजैनदर्शनअधिक। हीरमाहे गो
हीर॥जलमाहिगंगानीर।पटसूत्रमाहिहीर।अलंकारमाहे चूडामणि।जोतिषीमाहि
निशीमणि।तुरंगममाहे पंचवल्लभकिशोर॥नृत्यकलावंतमाहि मोर। गजमाहिऐरा
वण॥दैत्यमाहिरावणवनमाहिनंदन काष्टमाहिचंदन।तेजस्वीमाहि आदित्य।साह
सीकमाहिविक्रमादित्य।न्यायवंतमाहिश्रीराम।रूपवंतमाहेकाम।सतीमाहिसीता
स्मृतिमाहेगीता।वाजित्रमाहि तुंना।स्त्रीमाहेरंभा।सुगंधमाहेकस्तूरी।वस्तुमाहितेजंतु
री।पुष्पश्लोकमाहिनल।पुष्पमाहेसहस्रदलकमल।निमपर्वमाहि पर्युषणापर्व
मोटउजाणिवउ।इणइपर्विआवाइसुतनीसक्तिकरवी।तपअष्टमकरिवउ॥दान
देवउ।अमारनीउद्घोषणाकरावी।प्रभावनाश्रीवीतरागनीइजाहिवइकल्पसांभ
लिवाफलकहइ।विधिसुंजेवाचइविधिसंघातइसांभलइ विधिइंआराधइ।तेहनइ
इहलोकपरलोकनाफलथइ।आजन्मस्सयसहस्सा।सम्मत्तस्सनिसेवणा।जंभन्ने ५

सावउहोइ।तंकप्पसवणेणायार आजन्मलगइश्रीवृकसमकपालतांजेपुण्यउपार्जे
ई।तेपुण्यकल्पसांभलतांजाणिवउ॥एगग्गचित्ताजिणसासणंमि।प्रभावणापूयपरी
यणाजे॥तिसत्तवाराकिसुणंतिकप्पं।सवन्नयंगोयमतेतरंति॥२॥एकाग्रचित्तएकग्र
जिनशासननइविषइ प्रभावनाइ जिनपराथणकृतउ॥तिन्निसातइकवीसवारहे
गौतमकल्पसूत्रसांभलइ।तेनवाभवसंसारसमुद्रतरीपारपामइ॥एहनउव्याणकरा
करीसकइ।एहनीवाचनाइजिकरुवाइ॥जेहलणीएहबुंकह्युं।सव्वनईएंजाकच्छ
वालुया।सव्वउदहिजंतोयं।नत्तोविअणंतगुणा॥अत्थोइक्कस्स सुत्तस्स॥१॥सर्वन
दीनावेलूनाकणजउकोईगणीसकइ।सर्वसमुद्रनुंपाणीकणएबकेरभरवीसकइ
।एहकंनीएकेकासूत्रनउअर्थअनंतगुणउजाणिवउ॥तेवलणीएहनीवाचनाकहा
बाइ।पिणवखाणनकरहवाइ।एकल्पसूत्रआगेमहात्मामहासतीपर्युषणापर्वनइ
दिवसिमिली॥महासतीयांआडापराछिबांधीजिमपाकेकसूत्रसुणंइतिणपरिवा
चीसंवत्सरीपडिकमणउकरता।चउविधसंघनइंसंभलविताम हा।हिवणसिसेला 6

मोक्षपत्र ६

वइ छइ ते कारण जाणिवउ। एकल्पसिद्धांत ... छेद ग्रंथ जाणिवउ। यतः। अमहेण समाइन्नं। ज
इ कल्पइ केणइ असावद्यं। जइ ते अइक्क मे तो। अणंत संसारी उ सहिउ॥१॥ निर्मापणइ गीतार्थे कोई प
क आचरणा द्रव्य क्षेत्र काल भाव देखी आचरइ ते आचरणा जि कोई अतिक्रमइ। ते अणंत संसा
री थाइ उथामइ। एकल्पसिद्धांत किहां कुंती वाचा मानरूयउ। आनंदपुरइ ध्रुवसेन राजा राज्य
करइ। तेहनइ पुत्र नउ मरण हूउ। पर्युषणा पर्व पिणि आव्यउ। एतलइ संघ मिली गुरु प्रतइं क
हिउ॥ भगवन राजा नइं पुत्र नु सोक नुं कारण तिणइं करी पर्युषणा पर्व आवा इहर्ष नउ कार
ण कांइ न दीसइ। जउ तुम्हे कल्पसूत्र राजा संघ नइं संभलावउ तउ सहू रूडउ हुइ। एतलइ
गुरे ला सजाणी संघ प्रत्यक्ष वाचिवा लागा। यतः॥ नवशत अशीति वर्षे वीरात् ध्रुवसेन नागजा
ष्मानंदे। संघसमक्षं समहं। प्रारब्धो वाचितुं विज्ञैः॥१॥ नवसय असी वर्षे श्री महावीरकुंती
ध्रुवसेन राजा संघ समक्ष प्रारंभ्यउ। आनंदपुर संसायां। ध्रुवसेन महीपति। कल्पो वाचि
तु मारब्धः पुत्रशो। कोपनिर्वर्तिता॥२॥ आनंदपुर नगर। हिवणा नइं कालि वडनगर कहवाइ छइ।
कल्पशास्त्र इ आचार्मे तपसा कल्पय। कल्पइ उरासते। कल्पोरसायने कल्पः कल्प तथार्थे वा: ६

एकर। आचारशास्त्र इं अर्थ नउ दातार। कल्पक्षमादिकं कस्वाद॥ तव अर्थे पिण कल्पशास्त्रइं
कहवाइ। एकल्पसूत्र श्री दशाश्रुतस्कंध नुं आठमउ अध्ययन नवमा पूर्व कुंती ऊधरयुउ। श्री
भद्रबाहु स्वामइ। यतः। वंदामि भद्रबाहुं। पाईणं चरम सकल सुयनाणी॥ सुत्तस्स कारकमि
सिं। दसासु कप्पेय ववहारे॥१॥ भद्रबाहु स्वामिनुं॥ माहरउ नमस्कार। ते भगवंत प्राचीन गो
त्री। चउदपूर्वेन उ धरणहार। जिणइ नवावे नइ त्रिण्ह सूत्र कीधा दशाश्रुतस्कंध। व्यवहार द
शा नियुक्ति कीधी। आवश्यक नी नियुक्ति १ दशवैकालिक नी नियुक्ति २ उत्तराध्ययन नी नियु
क्ति ३॥ सूयगडांग नी नियुक्ति ४ दशाश्रुतस्कंध नी नियुक्ति। कल्प नी नियुक्ति। व्यवहारसूत्र
नी नियुक्ति ७। सूर्यप्रज्ञप्ति नी नियुक्ति ८। रिषिभाषित नी नियुक्ति ९। इहां दृष्टांत एक रि
वउ॥ तेह रूप रिनागकेतु नउ दृष्टांत। ७ एहा जि पृथिवी मंडलि ऊपरि चंद्रकांता नाम
नगरी॥ तिहां वजयसेन नामइ राजा राज्य करइ॥ तेह नगर माहि श्रीकांत नामि विवहारि
यउ वसइ॥ तेहनइ श्रीइ सखी नामि स्त्री पिण अपुत्रा। पुत्र नइ अर्थइ तिणइं देव दादि
क देवता नुं उपयाचित कीधा। तेहनइ एक नी विपुत्र हूउ जन्म पामिउ। कुडंब मनुष्य नउ एह ७

नाडगीयत्र वउ आलापसंलापमांतल्पउ। जेसांवत्सरपर्युषणापर्वि आव्यउ छइ। तिहां अष्टमतप करि
स्यइ। एहवउ सांभली ते बालकइ स्हापोह करतां जातिस्मरण ऊपनउं। पाछिलउ सबसं
बंध जाण्यउ। तउ मां पूर्तमइ अष्टमतप करि स्यइ। एहवउ जाणी स्तन्यपान न पीयइ। मातायं
इं तेही रनइं कहिउ जे पुत्र स्तन्यपान न करइ॥ पिताइं अनेक बालचिकित्सा कराव्यां। ते स्त
न्यनइ विरहइ मूर्छागत हूउ। पिताइं मृत जाणी पृथिवीखणावी माहि मेल्हू उ। पिताति
णइं दुखइं दिवंगत हूआ॥ राजाइं धन लेवा स्तणी आंपणा पुरुष मेल्ह्या॥ तिसइं पुस्तावि ध
रणेंद्रनउं आसन प्रकंप हूउ॥ अवधिज्ञानइं पाछिलउ सबंध दीठउ। पाछिलइं स्तविएग
र्भलिंगनउ पुत्र हूंतउ। बालकपणइ मातादिवंगत हूई पिताइ बीजी नारी कीधी। ते ति
यइ बालक ऊपरि प्रद्वेष करइ। ते बालक किमइर यौवनवइ प्राप्त हूउ। तेहनइ एक मित्र
बइ। तेह आगलि विमातानउ स्वरूप कहिउ। तिणइ कहिउ बापडा काइं परस्तवनउ हित
करि जिणइ धर्मनइ प्रभावि परास्तवन हूइ। तेहनउ वचन सांभली नइ तपकरि बाला
गउ। प्राहइं रिजुमंतिए हवउ अति ग्रहली धउ। पर्युषणापर्वि आव्यइ मइ अट्ठमतप ७
करिवउ। अन्यदा संवत्सरिपर्वि अट्ठमतप करी॥ कूटीरजइं तिहां रहिउ। बीजी मानाइं ब्र्ल
लता अग्नि दीधी॥ अगनिनइ योगि सुलध्यानं प्रमाणि तिहां हूंती मरी आंकांतनइ अहिपुत्र
पणइ ऊपनउ। ते मूर्छागत जाणी पिता दुखइं दिवंगत हूयउ॥ राजा धन लेवा लागउ। एवा
त जाणी धरणेंद्र ततकाल आव्यउ। बालकनइ मुखि अमृत मेल्ह्या सचेतन कीधउ। उत्पन्न
हूई राजा नाधुर वलेतावास्या॥ जीवतउ पुत्र इंहि ब्राह्मणिउ। पाछिला सबंधनउ संबंध कहिउ
॥ सर्वलोक विस्मय पाम्या। रोवती माता आवी स्तूमि हूंती पुत्र लीधउ। नागेंद्र धरणेंद्रइ
देखालिउ। तेह स्तणी नागकेतु नाम दीधउं॥ यौवनवइ प्राप्त हूउ। बकूबरिकला ग्रहण
कीधउ चिषइ विरक्त॥ जिणइ ज्ञा साधनी सेवा दाणशील तपनावरत। विशेषइं संवत्स
र चउमासक पर्वतिथि तिहां पोषध करइ॥ सम्यक्त्व मूल बार व्रत पालइ। अन्यदा को
ई एक चोर चोरी करी स्तजायइं मारयउ॥ आर्त्तध्यानइं करी व्यंतर हूउ। अविधिज्ञानइ
जाणी राजा ऊपरि कूप्यिउ। नगर ऊपरि शिला विकुर्वी॥ तिवारइं नागकेतइं चीतव्यउ॥ 8
संघ त्वित्यनउ विणासर षेकूउ॥ प्रासाद ऊपरि चडी सिला आवती हाथस्युं ठंसी॥ तेहनइ

मांडलीक धर्मी प्रतावइ व्यंतर प्रति भ्रष्ट थउ। स्वामी आंपलइ ध्यान कि व्यंतर गयउ। लोक माहे नागकेतनइ
उसवाद कउ। एकदा श्रीजिनचुनुं निएकाग्र हुउं जाकर। तो फल मादि कैती सर्प डंश्यो गुलीयइ
डंक दीधउ। सुभध्यानइ वर्द्धमान रूपक श्रेणइं चडिउ केवलज्ञान ऊपनुं। मासन इदेवताइं वेष
आपिउं। चारित्र नउ अंगीकार करी नइ विकजन नइ प्रतिबोधी मोक्ष इं पहुतउ। नागकेतनइ
अट्ठम नइ प्रभावि एहवा फल पाम्या। बीजाइ जि कोइ इम करिस्यइ। ते एहवा फल पामिस्यइ
एकल्प दशाश्रुतस्कंध नउ आठमउ अध्ययन श्री भद्रबाहु स्वामियइ नवमा प्रत्याख्यान प्रवा
द नामा पूर्वथी उद्धर्वु मान २।४।८।१६।३२।६४।।१२८।२५६।५१२।१०२४।२०४८।।४०९६।८१९२ हाथी
सर्वसंख्या १६३८३ प्रतले हाथी प्रमाण मषी पुंजलि खाइ ते हना नाम। उत्पाद पूर्व १ अग्रायणी २ वी
र्यप्रवाद ३। अस्तिनास्तिप्रवाद ४ ज्ञानप्रवाद ५ सत्यप्रवाद ६ आत्मप्रवाद ७। कर्मप्रवाद ८ प्रत्या
ख्यानप्रवाद ९ विद्याप्रवाद १० अबंध्य ११ प्राणावाय १२ क्रियाविशाल १३ लोकबिंदुसार १४। द्विवेइ श्रीभद्र
बाहु स्वामि ग्रंथ मांडतउ आदि मांगलिक करतउ नमस्कार किणइ कपरइ ते य कहइ।।।। नमो अ
रिहंताणं। नमो सिद्धाणं। नमो आयरियाणं। नमो उवज्झायाणं। नमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंचनमो ८
कारो। सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं। पढमं हवइ मंगलं।।१।। कल्याणमस्तु।। श्री।।